# बिहार की राजनीति और महिलाएँ

डॉ. आनन्दी कुमार

# बिहार की राजनीति और महिलाएँ

ISBN : 978-81-905856-5-1

सर्वाधिकार : डॉ० आनन्दी कुमार

प्रथम संस्करण : 2018

विक्रमाब्द : २०७५

प्रकाशक : **आकाशदीप प्रकाशन**
बी-101, लक्ष्मण आरकेड,
मुम्बई-421202

आवरण एवं ले-आउट : अभिषेक कुमार

मुद्रक : ए०के० इंटरप्राइजेज, पटना- 800 020

मूल्य : ₹ 475/-
(सजिल्द)

**Bihar Ki Rajniti Aur Mahilayen by Dr. Anandi Kumar**

Mob. No.:- 7257805595

# मगध की प्राचीन संस्कृति एवं परम्परा

डॉ० आशुतोष कुमार

**प्राच्य प्रकाशन**
पटना

Scanned with OKEN Scanner

**ISBN : 978-93-83591-16-9**

**Rs. : 600.00**

प्रथम संस्करण - 2017

© डॉ० आशुतोष कुमार

**प्रकाशक –**
**प्राच्य प्रकाशन**
अशोक राजपथ, चौहट्टा
पटना - 800 004.

**लेजर कम्पोज :–** आनन्द कम्प्युटराईज्ड प्रिंटिंग, पटना-800 020.

Scanned with OKEN Scanner

# Life and Works of Ancient Kings of Magadha

Dr. Ashutosh Kumar

Janaki Prakashan
Patna New Delhi

Scanned with OKEN Scanner

**ISBN : 978-93-86955-99-9**

© Dr. Ashutosh Kumar (1st Edition, 2020)

**Rs. 850.00**

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical including photocopying, recording or by any information storage and retrieval system without permission in writing from the author and Publisher.

*Published by :*
**Nand Kishor Singh**
Janaki Prakashan
Ashok Rajpath
Chauhatta
Patna - 800 004.

*Also at :*
1979, Ganj Mir Khan
Darya Ganj
New Delhi - 110 002.

*Photocomposing*: **Sheela Graphics,** Kankarbagh, Patna - 800 020.

*Print Line*: **H. S. Offset**, Darya Ganj, New Delhi - 110 002.

Scanned with OKEN Scanner

Dr. Ashutosh Kumar

# [illegible] of Ancient Kings of Magadha

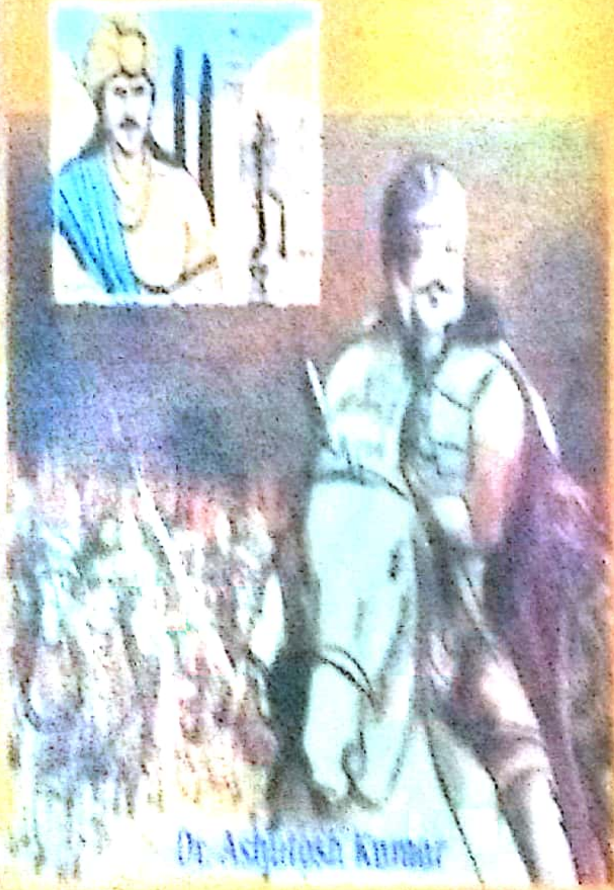

Dr. Ashutosh Kumar

Scanned with OKEN Scanner

# अनुक्रम

## भाग - एक (गद्य खण्ड)


1. महिला सशक्तीकरण और मानवाधिकार — 09
   डॉ. प्रिया ए.
2. मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री शोषण और संघर्ष — 13
   डॉ. राजमोहिनी सागर
3. मगध प्रांत के यशस्वी द्विवेदी नारी रत्न(बेगूसराय जिला के विशेष संदर्भ में) — 19
   डॉ. गुरु कुमार आनन्द
4. बैगा जनजाति की सांस्कृतिक विरासत, स्त्री नर्तन अभिव्यक्ति : नृत्य प्रदर्शन एवं शब्दावली की दृष्टि से अध्ययन — 27
   बी. श्रीकांत नंदकुमार
5. भारत की प्रथम महिला जासूस कैप्टन नीरा आर्य 'नागिनी' — 41
   देवेश कुमार भारती
6. राष्ट्र निर्माण में नारी का योगदान — 48
   श्रीमती सुनीता देवांगन
7. समकालीन महिला कहानीकार–नारी संवेदना — 51
   डॉ. मुक्कप्पा राठोड
8. बस्तर की प्रथम महिला शासिका प्रफुल्ल कुमारी देवी (1921–1936) — 55
   तिजूराम बघेल
9. अस्तित्व की तलाश मे आदिवासी स्त्री — 57
   श्रीमती दीपिका श्रीवास्तव
10. भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति — 62
    डॉ. मोहसेना खलील
11. बौद्ध दर्शन से प्रभावित महादेवी का करूणाकेंद्री हिंदी काव्य — 67
    प्रो. डॉ. शशिकांत 'सावन' (डी.लिट.)
12. Women Entrepreneurship — 79
    **Kanhayia Kumar & Mahipal Priyadarshi**
13. Encouraging Greater Economic Participation by Women — 81
    **Dr. Ratnakar Rana & Puja Kumari**
14. साहित्य में प्रभा खेतान व ममता कालिया का स्त्री विमर्श — 84
    नीता कुमारी
15. समय, समाज, परम्परा की दहलीज से टकराती मीराबाई — 91
    साधना सिंह
16. हिन्दी साहित्य में महिला कलम से कामकाजी स्त्री का स्वरूप — 96
    रेणु देवी


Scanned with OKEN Scanner

# मगध प्रांत के यशस्वी द्विवेदी नारी रत्न
## (बेगूसराय जिला के विशेष संदर्भ में)

डॉ. गुरु कुमार आनन्द
आईटीआई, बी.ए., बी.एड, एम.ए. द्वय, पी–एच. डी. हिंदी

"नारी निंदा ना करो, नारी रतन की खान
नारी से नर होत है, ध्रुव प्रह्लाद समान"[1]

प्राचीन बिहार के ऐतिहासिक स्त्रोतो से प्राप्त महत्त्वपूर्ण तथ्यों से स्पष्ट होता है कि यह राज्य (बिहार) पवित्र गंगा घाटी में स्थित भारत का उत्तरोत्तर क्षेत्र था जिसका प्राचीन इतिहास अत्यंत गौरवमयी और वैभवशाली था। यहाँ ज्ञान, धर्म, अध्यात्म व सभ्यता संस्कृति की ऐसी किरण प्रस्फुटित हुई जिससे न केवल भारत बल्कि समस्त संसार आलोकित हो गया। बिहार का प्राचीनतम वर्णन धर्मग्रंथ 'अथर्ववेद' एवं पंचविश ब्राह्मण में मिलता है। इन ग्रंथों में बिहार के लिए ब्रात्य शब्द का उल्लेख है।

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की जन्मभूमि बेगूसराय जिला बिहार के प्रभुत्वशाली जिलाओं की फेहरिस्त में शामिल है। यहाँ की धरती अपने ऐतिहासिक और भौगोलिक बनावट, महत्त्व और राजनीतिक जागरूकता के लिए हमेशा से प्रसिद्ध रही है। न सिर्फ स्वाधीनता संग्राम ही बल्कि समाज में भी बेगूसराय जिला के तत्कालीन लोगों की बलिदान सदा स्मरणीय, प्रार्थनीय एवम पूजनीय है।" बसमतिया – बात उस समय की थी जब मेरी उम्र वही लगभग 7–8 साल की थी। मेरा गांव राजापुर सचमुच राजाओं का गांव है। पता नहीं पूर्वजों ने उस गांव का नाम राजापुर कुछ सोच समझकर ही रखा होगा। इस गांव के दोनो तरफ से (पूरब और उत्तर) में रेलवे लाइन है, तो पश्चिम में नेशनल हाईवे है, वहीं दक्षिण में खल खल बहती बलान नदियाँ हैं। बहुत ही यह मनोहर और मनोरम राजापुर गांव है। उस गांव की बहुत सी विशेषताएँ है लेकिन एक सबसे बड़ी विशेषता वहाँ पर स्थापित माँ भगवती का मंदिर (स्थान) है। जहाँ से आज तक कोई भी दुखियारा निराश होकर नहीं लौटा है। उस गांव में 11 जातियों का लोग बड़ी प्रेम भाव से मिलजुल कर सदा रहते हैं। लेकिन, परिवर्तन तो संसार का नियम है जो यहां पर चरितार्थ हो जाता है।



Scanned with OKEN Scanner

"मयाऽध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम्।
हेतुनाऽनेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्तते।।"[2]

उसी गांव में एक अति पिछड़ी बूढ़ी लगभग 95 वर्ष की महिला रहती थी। जिसका नाम बसमतिया था। उनके सम्मान में मैं उन्हें महिला ना कहकर बूढ़ी दादी मां कहना ज्यादा उचित समझता हूँ। बसमतिया को मात्र एक ही संतान था, जिसका नाम था – बिलटा। जो अति बृद्ध बसमतिया का एक मात्र लाठी का सहारा था। उसी गांव में एक बार दो बड़े घराने में किसी कारण से मतभेद हो गया था। वह मतभेद धीरे–धीरे इतना उग्र हो गया कि दोनों एक दूसरे को हमेशा मरने मारने के लिए तात्पर रहा करते थे। जिसके लिए दोनों नई नई चाल हमेशा खेलते रहते थे। चूकी मैं यहाँ उन दोनों का वास्तविक नाम ना देकर करण सिंह और रमन सिंह उपनाम रख देता हूँ। समय बीतता गया। जब दोनों बड़े घराने अपनी–अपनी चाल में विफल रहने लगे, तब एक घराने ने नई चली।

एक दिन करण सिंह ने बिलटा को अपनी हवेली पर बुलवाया और उसे काफी रुपया पैसा देकर कहा देखो बिलटा, तुम्हारी माँ अब कितना दिन बचेगी। मै तुम्हें इतना धन दे रहा हूँ कि तुम्हारा पूरा जीवन उसी धन पर कट जाएगा। लेकिन इसके लिए तुम को मात्र एक काम करना होगा। जाओ तुम अपनी बूढ़ी मां को लाठी से मारते मारते अधमरा कर दो और जब पुलिस आएगी तब तुम यह बयान दे देना कि हुजूर मेरी माँ बहुत पहले रमन सिंह से कुछ रुपया उधार ली थी। जब उन्होंने हमसे रूपये मांगे तो हम देने में असमर्थ थे। तब उन्होंने कहा जाओ उस पैसे के बदले अपना घर और जमीन हमें लिख देना क्योंकि वहाँ पर हम अनाज का गोदाम बनाएंगे। जब मैं और मेरी माँ ने उन्हें ऐसा नहीं करने से मना कर दिया तो रमन सिंह और उनके पुत्र ने मेरी मां बसमतिया को और मुझे बहुत मारा और जिसके बाद मेरी माँ से कागज पर अंगूठा जबरदस्ती लगवा लिया। करण सिंह के अनुसार पूरा षड्यंत्र रचा गया था और जिसका अंजाम देने के लिए बिलटा तैयार हो गया था। वह अभागा अपार धन लेकर खुशी–खुशी घर आया और अपनी बूढ़ी माँ को पहले से रचित षड्यंत्र के अनुसार लाठी से चूर–चूर कर दिया। वह घटना घटते ही पुलिस महोदय को संयंत्र के अनुसार खबर चला गया। तुरंत पुलिस वाले अपने दल–बल के साथ बसमतिया के घर पर पहुंच गये। फिर क्या था ? गहन पूछताछ होने के बाद सारा फाइल उस रमन सिंह और उसके पुत्र के विरुद्ध लिखा गया। उसी बीच बसमतिया के अचानक कराहने की आवाज आई। अभी तक सब समझ रहा था कि वह मर चुकी है लेकिन वह अभी भी जिंदा है। फिर था क्या ? प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या, पुलिस कप्तान और गांव वालों ने दौड़कर उस बूढ़ी बसमतिया के



पास गया और उनसे कुछ कुछ पूछने लगा। पुलिस बसमतिया से कहता कि तुम्हारे पुत्र ने बयान दिया है कि तुमको और उसे रमन सिंह और उनके पुत्र ने लाठी से मार मार कर तुम्हें मार दिया था। मैं सभी रिपोर्ट तैयार कर लिया हूँ। अब मैं जा रहा हूँ और उन सभी को पकड़कर हो सके तो फांसी की सजा दिलवा दूँगा। पुलिस कप्तान का इतना बोलना कि ना जाने बसमतिया को कहां से इतनी ताकत आ गया जो अभी मर रही थी वह अब जोर–जोर से चीखने चिल्लाँने लगी और बोलने लगी ........

न हो बबुआ ना, मेरा बेटा पापी है, दुराचारी हत्यारा है। वह झूठ बोल रहा है। जब वह मेरे पेट में था और गरीबी के कारण मुझे कुछ खाने को नहीं था, तो जिसके विरूद्ध वह रपट लिखाया है। उन्हीं मालिक की माँ ने रात में पर्दा प्रथा देखते हुए सबसे अपने को बचाते हुए, मेरे टोला में आकर मुझे खाना लाकर देती थी। इतना ही नहीं जब उसका जन्म हुआ था तो मुझे दूध नहीं उतरता था। और यह अभागा भूख से खूब चिल्लाता रहता था, तब वही मालकिन बिलटा को अपने पुत्र की तरह स्तनपान बिना कोई भेदभाव का कराती थी।

साहब मुझे बिलटा पर से ज्यादा अपने आप पर गुस्सा आता है कि मैं ऐसे कलंक को जन्म ही क्यू दिया। उस हत्यारा की माँ बनने से तो अच्छा होता कि मैं बांझ ही कहलाती। जिसका नाम बिलटा ने आपको लिखवाया है वह आज तक कभी भी इस टोला में आया तक नहीं। मुझे किसी ने नहीं मारा, मुझे तो मारा है मेरा बेटा बिलटा। ले जाइए इसे और इसे बड़ी से बड़ी सजा दीजिए। इतना कहते ही बसमतिया सदा के लिए चल बसी।

**धन्य है माता ......**
**तुम धन्य हो।।।।।**

**अलमतिया** – बेगूसराय में एक काफी चर्चित जगह है जीरोमाइल। वही एक कुछ मुस्लिम पठान घराने की एक छोटीसी बस्ती है। उसी बस्ती में एक संभ्रात पठान परिवार अपने पत्नी और एक पुत्री जिसका नाम अलमतिया है के साथ हंसी खुशी रहता था। अलमतिया को बचपन से अब्बा अम्मी ने अच्छा संस्कार और अच्छे परिवेश में सदा रखा। समय का पता नहीं चलता। अलमतिया धीरे–धीरे कब बड़ी हो गई इसका पता ही नहीं चला। एक दिन ऐसा आया कि उस माँ बाप ने अपने फूल को बगल के ही गांव में एक बड़े घराने के लड़के से निकाह कर दिया।

कुछ वर्षों के बाद आज दोनों परिवार में खुशी का माहौल छाया हुआ था। क्योंकि अलमतिया बेगम को एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई थी। दोनों परिवार के लोगों ने मिलजुल कर खूब दावत मेहमान बाजी आदि किया था। दिन प्रतिदिन बढ़ता चला जा रहा था। बच्चा भी धीरे–धीरे बड़ा होने लगा था। हंसी–खुशी



Scanned with OKEN Scanner

से जीवन की गाड़ी चली जा रहा थी। लेकिन भाग्य को मंजूर था कुछ और ....। ना जाने किसकी नजर लग गई। एक दिन किसी गलतफहमी को लेकर दोनों पति–पत्नी में कुछ मनमुटाव हो गया। लेकिन वह मनमुटाव धीरे–धीरे उग्र रूप लेने लगा और अंततः दोनों को एक दूसरे से अलग कर ही दिया। उसका पति पुत्र को अपने पास रख कर अलमतिया को जबरदस्ती अकेले सदा के लिए मायके भेज दिया। वह रोती रही, चिल्लाती रही, पर किसी ने कुछ नहीं सुना। पीहर में उसके लिए दरवाजे सदा के लिए बंद हो गया था। अंततः वह मायके चली आई। किसी ने ठीक ही कहा है कि जब विपत्ति आती है तब अपने सगे संबंधी को लेकर ही आती है। उधर अलमतिया अपने पति से अलग होकर घर क्या आई कि जैसे भाग्य ही उससे रूठ गया। जब उसके अब्बा जान अलमतिया के बारे में जब सभी बात सुने, तो वे ये सब बाते सहन नहीं कर पाये और कुछ ही दिनों में परलोक सिधार गए। उसके अब्बू जान के मरने के गम में अलमतिया की माँ की भी तबियत ज्यादातर खराब रहने लगी। जमीन जायदाद चाचा, चचेरा भाई सब कैसे ना कैसे करके सब हड़प लिया। उसके माँ के पास एक छत जिसके नीचे वह दोनों रहती थी, उसके अलावा कुछ शेष नहीं रह गया था।

समय बीतता चला गया। अलमतिया को बचपन से ही माँ–बाप ने जो संस्कार दिया था उसका परिणाम था कि इतना कुछ होने के बाद भी वह अभी तक हिम्मत नहीं हारी थी। वह अपने पुत्र को पाने के लिए हर संभव हर प्रयास कर रही थी। यहाँ तक की न्याय पाने के लिए कानून का दरवाजा खटखटाया। अंततः बात कोर्ट तक पहुंच ही गई। कोर्ट ने कई तारीखों के बाद फैसला जारी कर दिया कि ठीक है– "यह बच्चा अलमतिया को उसके पति दे देंगे लेकिन अलमतिया अपने पति को पचास हजार नगद राशि 05.02.2001 तारीख को 12:00 बजे तक कोर्ट में जमा कर देगी। लेकिन यह ध्यान रहे कि अगर उस समय तक अलमतिया किसी कारण वश कोर्ट नहीं पहुँची या रूपया नहीं दे सकी तो यह बच्चा कभी भी अलमतिया को नहीं दिया जाएगा।

अलमतिया का सोहर आज बहुत खुश था क्योंकि वह अलमतिया के वर्तमान स्थिति से अच्छी तरह से वाकिब था। वह मन ही मन सोच रहा था कि इस केस में मेरी ही जीत होगी क्योंकि अलमतिया को अभी खाने के लिए एक रूपया नहीं है तो वह पचास हजार कहाँ से लाएगी। उधर अलमातिया को यह सोचते सोचते और रोते रोते बुरी हालत होती जा रही थी कि परसों तक इतना रुपया मै कहाँ से लाऊंगी। सब जतन करने के बाद भी उसे कोई रास्ता नहीं दिखा, तब ना चाहते हुए भी वह अपनी लाचार, विवश माँ के पास



जाकर रोते–रोते सारी बात सुना डाली। लेकिन किसी ने ठीक ही कहा है –

> "नास्ति मातृसमा छाया, नास्ति मातृसमा गतिः।
> नास्ति मातृसमं त्राण, नास्ति मातृसमा प्रिया।।"[3]

माँ तो माँ होती है। वह बोली देखे बेटा मैं अब कितना दिन ..., पर तेरे सामने तो अभी सब कुछ है। यह जो घर है इसे रख कर क्या करोगी ? इसे बेच दो और अपने बेटे को ले आ। फिर हम लोग इतनी बड़ी दुनिया में कहीं ना कहीं आराम से रह लेंगे। अलमतिया के बहुत कहने पर भी माँ ने एक भी ना मानी। अंततः अलमतिया ठीक अगले दिन उसी गांव के एक जमींदार को पचास हजार नगद राशि में घर बेच दिया।

आज की सुबह गजब हैं। अलमतिया के लिए आज एक नई सुबह आई है। वह बहुत खुश है लेकिन दुखी भी है। पर आज दुख का बोझ बहुत कम सा लग रहा है क्योंकि वह आज अपने नियमित समय पर कोट पहुंचकर अपने दुलारा को घर लाएगी। वह आज सुबह जल्दी उठ कर नहा धोकर मां के पैर छूकर बेगूसराय कोर्ट के लिए रवाना हो गई। अभी वह ऑटो से जीरोमाइल ठीक से पहुँची भी नहीं थी कि उसका माथा ठनक सा गया। उसके चारों तरफ सड़क पर काफी भीड़ और जाम ही जाम लगा हुआ था। उसे जीवन में ऐसा जाम देखने को पहली बार मिल रहा था। वह यह सब बात मन ही मन सोच रही थी कि उसका ऑटो जो अभी तक धीरे–धीरे सड़क पर सरक रही थी वह भी अब अचानक थम सी गई। ड्राइवर ऑटो से यह बोलते हुए उतर गया कि यहां तक का जो भाड़ा है, आप लोग देकर कृपया गाड़ी से उतर जाएँ। सब यात्री कुछ न कुछ बुदबुदाते हुए गाड़ी से उतर गए। लेकिन अलमतिया को तो कुछ सूझ ही नहीं रहा था। वह बेचैन होने लगी। उसे आगे का कोई भी रास्ता दिखाई नहीं पड़ रहा था। उसे हर हालत में 12:00 बजे तक कोर्ट पहुंचना था। उसे कोर्ट के बड़े साहब (जज) की अंतिम बोली याद है – "यदि परसों अलमतिया 12:00 बजे तक कोर्ट में पचास हजार जमा नहीं करेगी तो किसी भी हालत में बच्चा उसके पास नहीं जा सकता है।" वह मन ही मन यह सब सोच ही रही थी उसके कानों में कोई गंदी गाली की आवाज आई। उसका ध्यान टूटता है तब वह अपने आप को खचाखच भीड़ में एक ट्रक के आगे खड़ी पाती है। वह कैसे–कैसे करके जीरोमाइल तक पहुंच जाती है। अभी भी उसे 15 किलोमीटर और चलकर कोर्ट पहुंचना था। वह काफी तेजी से चली जा रही थी। बार–बार वह राहगीरों से पूछती जाती है भैया कितना बजा,



Scanned with OKEN Scanner

भाई साहब कितना बजा। कुछ दूर और चलने के बाद अब उसे चला नहीं जा रहा था। वह देखती है कि बेगूसराय का सबसे बड़ा और प्रसिद्ध अस्पताल के आगे बहुत भीड़ लगी हुई थी। बहुत सारे लोग सब अपने आप में जोर–जोर से कुछ कुछ बोल रहे थे। थोड़ी दूर से कुछ बच्चो की कराहने की तो, कुछ रोने की आवाज अलमतिया को स्पष्ट सुनाई पर रही थी। यह चंचल मन तो दो है – एक मन ने कहा चलो अलमतिया जरा रुक कर देख लें, तभी दूसरा मन ने कहा नही नही अलमतिया, तुम्हें क्या ? जल्दी चल 12:00 बजे तक कोर्ट पहुंचना है। अलमतिया दुविधा में पड़ जाती है। क्या करूँ रुककर थोड़ा देख लो या चलता रहा हूं अंततः परमार्थ वाला मन की जीत होती है और उस भीड़ में अलमतिया खो जाती है।''

> तरूवर फल नहिं खात है, सरवर पियहि न पान।
> कहि रहीम पर काज हित, संपति सँचहि सुजान।।'[4]

अलमतिया जब सभी भीड़ को चीरते हुए अस्पताल के मेन गेट पर पहुंचती है, तो देखती है कि वहां पर 10–12 बच्चे नीचे में रखे हुए हैं। कोई चिल्ला रहा है, तो कोई रो रहा है। किसी के सर से तो किसी के हाथ से खून निकल रहा है। वहाँ पर कई बड़े बड़े डॉक्टर आला लगाए हुए खड़े हैं और फोन पर कुछ कुछ बोल रहे थे। वह उस दृश्य को देखकर बेचैन हो उठती है। ना जाने क्यों उसके अंदर की ममता द्रवित हो उठती हैं। वह कैसे–कैसे हिम्मत करके भीड़ में से एक व्यक्ति से पूछती है कि क्या मजारा है। वह व्यक्ति काफी झुंझलाते हुए बोला ''अरे बच्चों से भरा एक स्कूल बस स्कूल जा रहा था कि तभी अचानक बस अनियंत्रित होकर खाई में गिर गया। उस बस में जो बड़े घर के बच्चे थे उनको तो उनके माँ–बाप तुरंत अस्पताल ले गए लेकिन जो गरीब के बच्चे थे, शायद वे यही रह गए। अब यहाँ के डॉक्टरों का कहना है कि पहले मैं पुलिस को खबर दूँगा या कम से कम पचास हजार रूपया जमा करना होगा तब इलाज संभव है नहीं तो कोई सरकारी अस्पताल ले जाइए।'' इतना सुनते ही अलमतिया को अपने बेटे की याद आने लगी। वह फिर एक सज्जन से समय पूछती है तब तक 11:00 बज चुका था। वह वहाँ से चलने लगती है कि उसे अस्पताल गेट के सामने रखे सभी बच्चे का एक एक चेहरा याद आने लगता है। अलमतिया फिर दुविधा में जाती है। वह मन ही मन सोचने लगती है क्या करूँ ? अगर मैं यह रूपया लेकर कोर्ट नहीं पहुँची तो मेरा बेटा मुझे कभी हासिल नहीं हो पाएगा। दूसरी तरफ यह भी सोचती है कि अगर यह रूपया यहां नही देती हूं तो ये सब बच्चे शायद मर जाएंगे। अलमतिया के चलते कदम अचानक थम सा गया। वह मन ही मन फैसला लेती है कि अगर मैं यह रुपया लेकर कोर्ट पहुंचती हूं तो मेरा एक बेटा मुझे मिल जाएगा।



लेकिन यदि मैं कोर्ट नहीं पहुंचती हूं तो ना जाने 10–12 बच्चे की जान बच जाएगी और ना जाने कितने माँ की कोख। बस क्या था ? अलमतिया वापस लौट गई। डॉक्टर को कुछ खरी–खोटी सुनाकर अपना वह पचास हजार रुपया डॉक्टर को दे दिया और कहा अल्लाह से डर और सभी को जान बख्श दे। अलमतिया यह भी नहीं सोची कि उसका बेटा, अपनी बूढ़ी लाचार माँ, अपना घर और ना जाने क्या–क्या ?

अलमतिया अपनी माँ के पास जाने के लिए पैदल वापस चल रही थी। जिस अलमतिया को अभी कुछ देर पहले एक डेग चलने में दम घुट रहा था। अब वह ताकत और बड़ी तेजी चल जा रही थी। उसे अब किसी बात का शोक या दुख नहीं है। वह आज बहुत खुश है ! बहुत ! उधर उस बूढ़ी लाचार बेबस माँ की राह निहारती आंखें अभी तक थकी भी नहीं थी की अलमतिया अकेले घर के आगे आती दिखाई दिया। माँ बिना कुछ पूछे या सुने ही जोर–जोर से रोने लगी। आस–पड़ोस के लोगों के पूछने पर अलमतिया ने अपना सब आपबीती सुनाई। अलमतिया की माँ को कुछ समझ में नहीं आ रही थी कि मैं अपने पुत्री पर गर्व करूँ या शोक करूँ। वाह रे ! अलमतिया वाह ! इतनी बड़ी कुर्बानी दे दी, वह भी हंसते–हंसते।

उधर कल की सुबह शपथ पत्र के अनुसार अलमतिया और उसकी बूढ़ी लाचार माँ अपने घर को सदा के लिए छोड़कर निकल ही रही थी कि घर के सामने पहले दो वर्दी वाले पुलिस से भरी गाड़ी और फिर एक उजला एम्बेसडर कार अचानक आकर रुक जाता है। पूरा गांव अलमतिया के घर पर धीरे–धीरे जमा होने लगती है। आस पड़ोस परेशान, सब परेशान, अलमतिया भी परेशान...... उस एंबेसडर कार से सबसे पहले अलमतिया का दुलारा बेटा उतरकर दौड़ते हुए अपनी मां से लिपट जाता है। अलमतिया के आंखों से ममता की धारा बहती जा रही थी। जो रुकने का नाम ही नहीं ले रहा था। करीब 10 मिनट के बाद उस कार से एक बड़े साहब ADJ–5 (जज साहब) उतरे और अलमतिया को दोशाला उसके शरीर पर ओढ़ाते हुए कहते हैं ''धन्य हो अलमतिया, तुम धन्य हो ! सुनो गांव वाले यह कल तक अलमतिया थी ? लेकिन आज से यह अलमतिया नहीं मेरी बेटी है। अर्थात। ADJ–5 की बेटी है। आज से इसका सुख–दुख मेरा है।'' जज साहब ने गाड़ी के पीछे की ओर इशारा करते हुए कहा देखो उधर तुम्हारा पति सर झुकाए हुए खड़ा है। अब तुम उसे क्या सजा दोगी वह आदेश करो मैं यहां खड़ा हूँ।

लेकिन यह तो भारत माता की धरती है। पत्नी की सुंदरता या खुशी तो उसके सोहर में ही होता है। अलमतिया न कुछ समझते हुए जज साहब के पैर पर गिर जाती है और रोते हुए कहती है – ''जो भी हो, जैसा भी हो, मेरा



Scanned with OKEN Scanner

पति मेरा देवता है।" जज साहब उसे उठाकर अपने सीने से लगा कर मेरे कहने लगते हैं पुत्र क्या होती है अलमतिया ? यह मैं कल समझ पाया। अगर कल तुम अपनी कुर्बानी नहीं दी होती तो शायद मेरा इकलौता पुत्र आज जिंदा नहीं रह पाता। हुआ यह था कि मेरा ड्राइवर कल छुट्टी पर था। मेरा बेटा अपने दोस्तों के साथ बस से स्कूल जाने का जिद करके स्कूल चला गया था। जब बस खाई में गिरी थी तो उस बस में मेरा बेटा भी सवार था। सभी तो अपने अपने बच्चों को लेकर आनन–फानन में अस्पताल चले गए थे लेकिन 10–12 जो बच्चा बच गए था, उसी में एक मेरा भी बेटा था। क्योंकि मैं जज हूं यह बात लोग जानते हैं लेकिन उस भीड़ में चाहे वह डॉक्टर हो या फिर कोई भी वह यह जानता नहीं था कि उस बच्चे में एक बच्चा जज का भी बेटा है। अलमतिया तुम सब जानते हुए भी अपनी पीड़ा, अपनी वेदना, अपनी ममता को एक क्षण में त्याग कर इतना बड़ा बलिदान करके यह साबित कर दिया कि तुम सिर्फ बिहार की ही नहीं बल्कि पूरे भारतवर्ष की वह आदर्श नारी हो जिसे लोग जुग–जुग तक याद करते रहेंगे।

अतः मैं ADJ–5 (बेगूसराय कोर्ट) आदेश देता हूँ की आज से अलमतिया मेरी बेटी हैं और यह अपने बच्चे, पति और बूढ़ी माँ को लेकर मेरे घर पर मेरे साथ सदा रहेगी। तमाम भीड़ तालियों से गूंज उठा।

जय हो अलमतिया, तेरी सदा जय हो।

> **"नारी मूरत त्याग की, प्रेम दया की खान।**
> **करना जीवन में सदा, नारी का सम्मान।।"[5]**

**संदर्भ सूची –**


1. अमृतवाणी– कबीर दास
2. श्रीमद्भगवद्गीता 9/10
3. महाभारत महाकाव्य
4. रहीम ग्रंथावली रहीम
5. कविता कोश गरिमा सक्सेना
6. साक्षात्कार –आचार्य श्री राम पुकार राय
7. साक्षात्कार –श्री रामविलास कुंवर शास्त्री
8. साक्षात्कार –अल्ताफ खान
9. साक्षात्कार –रजिया बेगम
10. साक्षात्कार –सोनेलाल सोहर

# वर्ण एवं राज्य

(1000 ई०पू० से 200 ई०पू० तक)

डॉ. आशुतोष कुमार

Scanned with OKEN Scanner

# वर्ण एवं राज्य

## ( 1000 ई०पू० से 200 ई०पू० तक )

**डॉ॰ आशुतोष कुमार**
पी–एच.डी. एल.एल.बी., एम.एड.
प्रो.–इन–चार्ज
बी.एन.एम. कॉलेज, बढ़हिया
लखीसराय (बिहार)

**जानकी प्रकाशन**
पटना नई दिल्ली

Scanned with OKEN Scanner

ISBN : 978-93-949515-5-1

प्रथम संस्करण - 2020

© डॉ० आशुतोष कुमार

**प्रकाशक :**
**नन्द किशोर सिंह**
जानकी प्रकाशन,
अशोक राजपथ, चौहट्टा,
पटना - 800 004.

**शाखा कार्यालयः**
1979, गंजमीरखान,
दरियागंज,
नई दिल्ली-110 002.

**लेजर कम्पोज** : शिला ग्राफिक, कंकड़बाग, पटना-800 020.
**मुद्रक** : एच० एस० ऑफसेट, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002.

---

**Varna Avam Rajya**

By: Dr. Ashutosh Kumar

**Rs. 650.00**

Scanned with OKEN Scanner